चौधरी PHOTOSTAT

"I don't love studying. I hate studying. I like learning. Learning is beautiful."

"An investment in knowledge pays the best interest."

Hi, My Name is

हिंदी

UGC NET

उपन्यास - 4

महाभोज - मन्नू भंडारी (150 Pages)
गोदान - मुंशी प्रेमचंद (300 Pages)
दिव्या - (तत्सम शब्दों का प्रयोग)
मैला आँचल - (बिहारी भाषा का प्रयोग)

नाटक

भारत दुर्दशा - केवल गद्य पढ़े, कविताएं छोड़ दें
आषाढ़ का एक दिन -
स्कन्दगुप्त - 1) भूमिका नहीं पढ़नी
2) चरित्रों की संख्या बहुत ज्यादा

निबंध निलय - 7 निबंध
सम्पादक - सत्येन्द्र

① प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियां / प्रेम मंजूषा - बूढ़ी काकी, ईदगाह
② एक दुनिया समानान्तर - राजेन्द्र यादव

प्रेमचन्द की कहानियाँ

1) बड़े घर की बेटी
2) बूढ़ी काकी
3) अलग्योझा
4) पूस की रात
5) ईदगाह
6) कफन

} Category-I Must Read

1) गुल्ली डंडा
2) ख़ुदगर्ज़ि
3) दूध का दाम
4) शतरंज के खिलाड़ी
5) लाश्रयता का रहस्य

} Category-II Read

बाकी सब } Category-III Can read if you want

एक दुनिया समानान्तर

1) मछलियाँ
2) खोई हुई दिशाएँ
3) यही सच है
4) एक और जिंदगी
5) टूटना

} Category-I Must Read

1) जिन्दगी और जोंक
2) मेरा दुश्मन
3) गुल की बन्नो
4) परिन्दे
5) चीफ की दावत
6) एक नाव के यात्री
7) भोलाराम का जीव

} Category-II Read

बाकी सब } Category-III

निबंध निलय - 7 निबंध → 6 Simple, 1 tough

Q. आने की बहुत कम संभावना

हिन्दी भाषा

शुरुआत – ~~1000 BC~~ AD 1000 AD

हिन्दी भाषा – संस्कृत से उत्पन्न हुयी है।

संस्कृत स्थान, शब्द आदि के हिसाब से बदलते-बदलते अनेक भाषाओं में परिवर्तित हो गयी हिन्दी इन भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा है। अन्य भाषाएं ~~संस्कृत~~, मराठी आदि हैं

भाषा के बदलाव की कोई निश्चित तारीख नहीं है।

भाषा और बोली – बहनों का संबंध।

↳ एक ही Process में develop होने वाली चीज।

Q. अवधि भाषा में गंभीरता और ब्रज भाषा में चंचलता क्यों है?
(राम) (कृष्ण)

Ans: भाषा पर सामाजिक व आर्थिक प्रभाव पड़ता है

हिन्दी भाषा में 19 बोली हैं। 19 बोलियों के समूह को हिन्दी कहते हैं।

आदिकाल { 1000 – 1350

मध्यकाल { 1350 – 1850 } अवधि, ब्रज भाषा का प्रभुत्व। अवधि – रामचरितमानस की रचना
ब्रज – सूरदास की रचनाएं

आधुनिक काल { 1850 – Present } खड़ी बोली को अंग्रेजों के समय में अचानक महत्व मिलने लगा।
↳ मेरठ एवं आस-पास का क्षेत्र।
↳ क्योंकि इसे अंग्रेज साहित्यकारों ने Promote किया।

मानक हिंदी में 80% खड़ी बोली का, 15% अवधि एवं ब्रजभाषा का तथा 5% अन्य भाषाओं का योगदान है।

साहित्य

↳ 3 भाग → मनके, मौखिक, लिखित

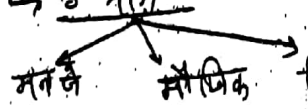

साहित्य की रचना → ① लिखने के बाद – लिपि के विकास के बाद

हिंदी भाषा के साथ ही हिंदी साहित्य की शुरुआत भी 1000 AD में हो गयी।

1350 – 1850 → मध्यकाल

Scanned by CamScanner

4 काल

1) ~~आदिकाल~~ (आदिकाल)
2) ~~मध्यकाल~~
3) ~~रीति काल~~
4) ~~आधुनिक काल~~

4 काल

1) आदि काल - 1000 - 1350 AD
2) भक्तिकाल → 1350 - 1650
3) रीति काल → 1650 - 1850

} मध्यकाल → 1350 - 1850 → अवधि एवं ब्रज भाषाओं में रचना

4) आधुनिक काल → खड़ी ~~भाषा~~ बोली में रचना
(1850 - Present)

} 3 कालों में सिर्फ कविताऐं ही लिखी गयी।

→ गद्य और साहित्य की रचना सिर्फ आधुनिक काल में हुयी।

मध्यकाल
↓
II Paper

4 भक्तिकाल + 1 रीतिकाल = 5 कवि

* 1850 - भारतेन्दु पैदा हुये। इन्होंने भारत दुर्दशा की रचना की।
↓
मध्यकाल & आधुनिक काल
↓
Transition Phase

दुनिया में रहना - घर छिपाना नहीं अच्छा
मर जाना पर कुछ कर जाना नहीं अच्छा } खड़ी बोली

* गणित - वस्तुनिष्ठ - Perfect
साहित्य - आत्मनिष्ठ - Not Perfect

Scanned by CamScanner

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।

चौधरी PHOTOSTAT
39, Jia Sarai, Near IIT, Hauz Khas
New Delhi-16
Mobile No. : 9818909565, 9211212600

Name _____

Class Hindi - I

Address _____

_____

BRANCH
B-11, Basement Complex, Near ICICI ATM,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-11009

Scanned by CamScanner

Date
16 Aug 2013

बहुत कुछ को अस्वीकार करने का साहस लेकर ~~पैदा~~ अवतीर्ण हुये, इसलिये युग प्रवर्तन कर सके।

① युग प्रवर्तन के लिये जरूरी होता है कि युगनायक अपने समय की गलत प्रवृत्तियों को चाहे वे कितनी भी कठोर और मजबूत हो - तर्क और साहस के साथ खारिज करे और किसी भी स्थिति में समझौता न करे। भारतीय साहित्य परंपरा में कबीर जैसा युग प्रवर्तक कोई दूसरा नही हुआ जिसका कारण है कि अस्वीकार का साहस जितना इनमें था इतना किसी और में नही।

② कबीर ने किस-किसको अस्वीकार किया-

a) शंकर के शुष्क ज्ञान मार्ग को (इसके स्थान पर सरल भक्ति मार्ग चुना)
b) नाथों के शुष्क हठयोग को छोड़ा (भक्ति को चुना)
c) किसी भी संप्रदाय से संबंधित होने की मानसिकता को छोड़ा (न हिंदू न मुसलमान)
d) वर्ण व्यवस्था को छोड़ा।
e) सगुण ईश्वर को छोड़ा। (निर्गुण
f) आडंबरों को छोड़ा
g) ~~विलासिता के मूल्य को खारिज किया।~~
h) सत्ता के सामने झुकने से मना कर दिया।
i) भाषायी अभिजात्य को खारिज किया।

③ इतना सब कुछ अस्वीकार करने की क्षमता कहाँ से आयी-

साहस

1) नाथ परंपरा का असर
2) सामाजिक पीड़ाओं का भोक्ता होना
3) भक्त होने के कारण ईश्वर के साथ होने की भावना
4) निस्स्वार्थ
5) निरक्षर होने से आत्मविश्वास चरम स्तर पर

{ योग मार्ग को इसलिये छोड़ा क्योंकि वह इनके अनुभव के विरुद्ध था }

तार्किकता / विचारशीलता

① अनपढ़ होना - किसी विचारधारा का ज्यादा प्रभाव नही पड़ा।
② बहुश्रुत होना
③ वैज्ञानिक दृष्टिकोण इनके व्यक्तित्व का मूल हिस्सा है वे किसी भी बात को तब तक नही स्वीकारते थे जब तक वह बात इनके तर्क और अनुभव पर खरी नही उतरे।

मेरा तेरा मनुआ कैसे इक होय रे।
→ मैं कहता आँखिन की देखी तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी तू राख्यौ उरझाई रे।
सुलझाने वाली

④ अद्वैत वेदांत के इस मूल तर्क से सहमत है कि ईश्वर एक है और उसी ने सभी प्राणियों को जन्म दिया है। इसलिये किसी भी तरह का भेदभाव ईश्वरीय विधान के विरुद्ध है।
⑤ निर्गुण ईश्वर की धारणा किसी तरह के आडंबर को स्वीकार करती ही नही।

Scanned by CamScanner

कबीर एक ओर तो अद्वैतवाद के समर्थक हैं, दूसरी ओर भगवत भक्ति के दृढ़ समर्थक इस अंतर्विरोध की व्याख्या आप कैसे करेंगे ?

Ans. मोक्ष प्राप्ति के लिये ज्ञानमार्ग की जगह भक्तिमार्ग चुना। → Contradiction

(1) कबीर के व्यक्तित्व की तरह उनका दर्शन भी बहुआयामी है ये विभिन्न आयाम एक हद तक सहयोगी प्रतीत होते हैं जबकि कहीं परस्पर विरोधी भी लगने लगते हैं। जिस तरह किसी नये पाठक के लिये यह समझना कठिन है कि हठयोग की ऊंचाइयों तक पहुँचे हुए कबीर भक्ति में कैसे डूब जाते हैं, वैसे ही दर्शन की साधारण जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी यह जानकर अचंभित हो जाता है कि वे अद्वैतवाद और भगवत भक्ति का समर्थन साथ-2 करते हैं। इस अंतर्विरोध का उत्तर कबीर के जटिल व्यक्तित्व में छिपा है।

(2) कबीर पर अद्वैतवाद का क्या प्रभाव है ?

क) निर्गुण ब्रह्म की धारणा

ख) आत्मा और ब्रह्म के एकत्व की धारणा

ग) जगत के मिथ्या होने का विश्वास

(3) इसके साथ भगवत भक्ति को कैसे जोड़ते हैं ?

क) कबीर किसी दर्शन के पूर्ण अनुयायी नहीं थे उन्होंने सभी दर्शनों को चुना समझा, तथा अपनी तर्कबुद्धि के आधार पर उनका उतना ही हिस्सा लिया जितना उचित लगा। इसलिये शंकर के अद्वैतवाद से साथ पूरी संगति होना उन्हें न जरूरी लगा, न ही वांछनीय।

ख) निर्गुण ब्रह्म का विचार उन्हें इसलिये ठीक लगा क्योंकि वह आडम्बरों से परे था, हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिये ग्राह्य था और निम्न वर्गों की जनता की मुक्ति के साथ भी जुड़ा था। किन्तु, जिन वर्गों को कबीर संबोधित करना चाहते थे उनमें तर्क और ज्ञान का ऐसा स्तर नहीं था कि वे कठिन ज्ञान मार्ग की साधना कर सकें। उन गरीबों-वंचितों के लिये ऐसा मार्ग चाहिये था जो सरल हो, सरस हो तथा बहुत अधिक अपेक्षाएँ न रखता हो। कबीर ने ज्ञान और योग दोनों को खारिज किया क्योंकि ये कठिन और शुष्क मार्ग थे उन्होंने भक्ति को चुना क्योंकि वह सहज और सर्वजनसुलभ था।

eg - भक्ति के गीत लिखे?

(4) निष्कर्ष - प्रश्न में जो अंतर्विरोध दिख रहा है, वास्तव में वह है नहीं। किसी आशय में तो कबीर ने शंकर से दर्शन तो लिया है, किन्तु साधना पद्धति के मामले में उनका अनुकरण नहीं किया थी इस बिंदु पर उनके लिये शंकराचार्य से ज्यादा प्रभावित रामानंद हो गये हैं।

Scanned by CamScanner

#

कबीर का काव्य

हठयोग / साधनात्मक रहस्यवाद

अवधू, गगनमंडल

उलटबासियाँ और खेचड़ी मुद्रा

⇒ कविता → मान तो लेते हैं, परंतु गुण शून्य के बराबर है

उपदेश देने वाली कविताएँ

- Eg ऐसी बानी बोलिये...
- Eg साँई इतना दीजिये...
- Eg बड़ा हुआ तो क्या हुआ...
- Eg माया मुई न मन मुआ

⇒ चमत्कार नहीं, भावुकता नहीं

⇒ पहले वर्ग से बेहतर कविताएँ

सामाजिक विषयों पर

- Eg जो तू बाभन बभनी...
- Eg मूँड़ मुंडाये हरि मिले
- Eg कांकर पाथर जोरि के

⇒ संवेदना की दृष्टि से महान कविताएँ (सामाजिक चेतना की दृष्टि से महान)

⇒ महान व्यंग्य क्षमता

⇒ पहले वर्ग से बेहतर

भावनात्मक रहस्यवाद / सूफी कविताएँ

- Eg तलफै / बालम...
- Eg हमन है इश्क मस्ताना... / पिउ...

⇒ शानदार कविताएँ

⇒ माधुर्य भाव की सबलता

⇒

वर्ग-5

Q.1 कबीर की आधी से ~~अधिक~~ दार्शनिक रचनाएँ पद्य मात्र हैं जिन्हें कविता नहीं कहना चाहिये।

① भूमिका - जो विवाद सिद्धों नाथों व संतों के साहित्य के बारे में है वैसा ही कबीर काव्य के कुछ अंश के बारे में भी। विवादास्पद प्रश्न यह है कि कबीर की जो कविताएँ दर्शन की गहराईयों से जुड़ी हैं उन्हें साहित्य का हिस्सा माना जाए या नहीं।

② कबीर की कुछ दार्शनिक कविताएँ सचमुच ऐसी हैं कि उन्हें साहित्य मानने में संदेह होता है हठयोग से जुड़ी इन कविताओं में वैयक्तिक प्रतीकों की प्रधानता के कारण अप्रतीतत्व दोष इतना सघन है कि आम पाठक उनके अर्थ को छू ही नहीं पाता।

Eg नैया बिच नदिया डूबी जाए।

③ किन्तु कबीर के दर्शन में बहुत सारे प्रभाव ऐसे भी हैं जो कविताओं का हिस्सा बनकर भी उन्हें दुरूह नहीं बनाते। ऐसे हिस्सों में शंकर के अद्वैतवाद, वैष्णवों के प्रपत्तिवाद तथा सूफियों के तसव्वुफ़ को रखा जा सकता है।

क) अद्वैतवाद के प्रतीक समझ में आते हैं पर सामान्यतः चमत्कार पैदा नहीं करते। उन्हें कविता मानने में समस्या नहीं है, साधारण कविता माना जा सकता है।

Eg सात समन्द की

Eg जल में कुंभ

ख) वैष्णव वैराग्य से प्रभावित कविताओं में भावुकता और सहजता इतनी ज्यादा है कि वह पाठक के मन को प्रभावित किये बिना नहीं रहती।

Eg गुरु गोविंद दोऊ खड़े   Eg मैं तो कूता राम का

Eg [illegible] पाती जात है